विभिन्न राजवंशों के इतिहास को जानने के मुख्य स्रोत-ग्रन्थ

दिल्ली सुल्तानों के इतिहास को जानने में हमें इस युग के पश्चात् के इतिहासकारों, मुख्यतया निजामउद्दीन, फरिश्ता और बदायूँनी के विवरण से भी बहुत सहायता मिलती है। परन्तु लोदी-वंश के अतिरिक्त अन्य सभी राजवंशों के इतिहास को जानने के लिए समकालीन ग्रन्थ भी उपलब्ध हैं, जिनमें से मुख्य निम्न हैं—

1. गुलाम-वंश

(i) हसन निजामी का **ताज-उल-मासिर**,
(ii) मिनहाजुद्दीन सिराज का **तबकात-ए-नासिरी**, और
(iii) जियाउद्दीन बरनी का **तारीख-ए-फीरोजशाही**।

2. खलजी-वंश

(i) जियाउद्दीन बरनी की रचनाएँ,
(ii) अमीर खुसरो की रचनाएँ,
(iii) ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक इसामी का **फुतूह-उस-सलातीन**, और
(iv) इब्न बतूता का **रेहला**।

3. तुगलक-वंश

(i) अमीर खुसरो की रचनाएँ,
(ii) जियाउद्दीन बरनी का **तारीख-ए-फीरोजशाही**,
(iii) ख्वाजा अब्दुल्ला मलिक इसामी का **फुतूह-उस-सलातीन**,
(iv) इब्न बतूता का **रेहला**,
(v) बदरुद्दीन चच्च की कविताएँ—बदरुद्दीन ताशकन्द का निवासी था। वह भारत आया और कुछ समय तक सुल्तान मुहम्मद तुगलक के दरबार में रहा। उसने फारसी में कुछ कविताएँ लिखीं जिनसे कुछ तत्कालीन महत्त्वपूर्ण घटनाओं की तारीखों को जानने में सहायता प्राप्त होती है,
(vi) तथाकथित मुहम्मद तुगलक की आत्मकथा के **चार पृष्ठ**,
(vii) शम्स-ए-सिराज अफीफ का **तारीख-ए-फीरोजशाही**,
(viii) **सीरत-ए-फीरोजशाही** (लेखक का नाम अज्ञात है),
(ix) सुल्तान फीरोजशाह का **फतूहात-ए-फीरोजशाही**,
(x) याहया बिन अहमद का **तारीख-ए-मुबारकशाही**,
(xi) अमीर तैमूर की आत्मकथा, **मलफूजात-ए-तैमूरी**,
(xii) सराजउद्दीन-अली-याजदी का **जफरनामा**।

4. सैय्यद-वंश

(i) याहया-बिन-अहमद का **तारीख-ए-मुबारकशाही**।

Scanned with CamScanner

5. लोदी-वंश

(i) शेख रिजकुल्ला के **वाकियात-ए-मुश्ताकी** और **तारीख-ए-मुश्ताकी**,

(ii) अहमद यादगार का **तारीख-ए-शाही** या **तारीख-ए-फलातीत अफगाना**,

(iii) नियामत उल्ला का **मखजात-ए-अफगाना**,

(iv) अब्दुल्ला का **तारीख-ए-दाउदी**।

6. अन्य

प्रान्तीय राजवंशों के इतिहास को जानने के लिए भी विभिन्न ग्रन्थ उपलब्ध हैं; जैसे—सिन्ध के इतिहास के लिए मीर मुहम्मद मासूम द्वारा रचित **तारीख-ए-सिन्ध**, कश्मीर के इतिहास के लिए मिरजा हैदर का **तारीख-ए-रशीदी** और हैदर मलिक का **तारीख-ए-कश्मीर**, बंगाल के लिए गुलाम हुसैन सलीम का **रियाज-उल-सलातीन**, गुजरात के लिए मीर अबू तुराब वली का **तारीख-ए-गुजरात**, दक्षिण के अहमदनगर राज्य के लिए सैय्यद अली तबातबा का **बुरहान-ए-मासिर** आदि। इनके अतिरिक्त, इस समय इन राजवंशों के इतिहास को जानने के विभिन्न ग्रन्थ संस्कृत भाषा में भी उपलब्ध हैं। कुछ विदेशी यात्रियों के विवरण भी महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री माने गये हैं। कालीकट के राजा के यहाँ नियुक्त हुए पर्शिया के राजदूत अब्दुर रज्जाक और इटली के एक यात्री निकोलो कोन्टी के विजयनगर राज्य के वर्णन को इनमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। इन दोनों ने विजयनगर-राज्य की यात्रा की थी और वहाँ के राजा, शासन-प्रबन्ध, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति आदि के बारे में स्वयं देखकर लिखा था। इस कारण, इनके वर्णनों को बहुत रोचक और विश्वसनीय माना गया है।

Scanned with CamScanner